श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥
श्रीहनुमते नमः ॥

श्रीराम झांकी बिलास

जिसको
अनन्तश्रीरामानन्दीयस्वामीश्रीअयोध्यानिवासी
श्रीराघवेन्द्रसखा श्रीकामदेन्द मणिजी
के शिष्य
सीतारामशरण (रामरसरङ्गमणि) जीने
श्रीरामरूपानुरागवन्तों के आनन्दार्थ
निर्माण किया

उसी को
बम्बई बुकसेलर सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द
ने मुद्रित कराके प्रकाशित किया।

पं० घासीराम त्रिपाठी के देशोपकारक प्रेस
लखनऊ में छपी सन् १९१० ई०

श्री सीताराम चन्द्राभ्यां नमः ।

अथ श्री राम झाँकी विलास।

दो० बन्दौं सीताराम की, बांकी झांकी मंजु ।
भरतलषनरिपुशाल युत, छाकीसुखछविपुंज॥

॥ कवित्त घनाक्षरी ॥

बैठे मंजुमहल श्री महाराज दशरथ लिये अंक लखैं शोभा श्यामल लला की है । कौसिला लखन लिये शत्रुशाल कैकई जी भरत सुमित्रा सब महामोद छाकी हैं ॥ देखैं रसरंगमणी सखा रघुबंशी छटा आंखैं प्रीति पुंज पागीं सकल सभाकी हैं । मोहित भुसुंडि शंभु शिशुरूप ताकी बालकेलि सुखमाकी बनीबांकी राम झांकी है ॥ १ ॥ झांकी है झरोखाते सनेहवती श्याम रूप परी प्रेम कूप में अनूप छवि छाकी है । छाकी है प्रमोदमद मन्द मुसक्यान जुत चन्दमुख देखिकै

चकोरी आंखि ताकी हैं॥ ताकी है जुकौन समताकी रसरङ्गमणी जाके हिये बसीं राम आंखैं भौंह बांकी हैं। बांकी है न ताकी नेक्कु बाल सुखमाकी जिन श्याम गौरताकी चार झांकी बांकी झांकी है॥२॥ छोटे छोटे पद कंज पनहीं बनी हैं मंजु छोटे छोटे करकंज कान्ति त्यौं कड़ाकी है। छोटे छोटे धनु बान तून रसरंगमनी पीतपट अंग सीस चौतनी सुबांकी हैं। छोटे छोटे सखा बंधु मोटे मोटे प्रेम पगे छोटे छत्र चौंर चालैं चित्तके मिलाकी हैं॥ खेलैं सुख छाकी सुख लहैं लोग झांकी बांकी मोहनी कला की बालरूप राम झांकी है॥३॥ श्यामल सलोने गात बसन सोहात पीत पद जलजात गति सिंह उपमाकी है। उदर रसाल उर बिपुल बिशाल माल मोती मणि जाल कांति कौस्तुभ कला की है। शोचन के मोचन बिलोचन बिशाल लाल "रसरंग" रोचनि विलोकनि सु बांकी है। लाल रघुनन्दन

की चंदमुख चन्दन की मन नैन फन्दनकी बांकी बनी झांकी है ॥४॥ कंठ कंबुकल त्यों चिबुक अंबफल औ अधर बिम्ब भल उप शुक नासिका की है। आनन सु इन्दु कांति कुन्दकलि दंत पांति भांति कामकंदुक कपोलके थलाकी है ॥ नैन अरबिन्द मैन शर धनु भौंहबर रसरङ्ग मुकुट प्रभाकर प्रभाकी है। रीति कविता की ताते कही समताकी पै अनूप सुखमाकी राम झांकी बर बांकी है ॥५॥ मैन नगसे नितंब संगी कटि सिंह सोहै रूप घनश्याम पट दुति तड़िता की है। नाभिसर त्रिबली लहर ज्यों सिवार वर-रोमराजी हंस श्रेणी मोतिन हराकी है ॥ अलक अलीके पुंज नैन मुख मंजु कंज बिकसे मुकुट देखि सम भानु भाकी है ॥ हाय कवछाकी रसरङ्गमणी झांकी कोटि काम के कला की यह बांकी राम झांकी है ॥ ६ ॥ पद मंजुताकी कंज उपमान ताकी दुति नखन प्रभाकी मानो नखत सभा की है। पीत पटुका की कटि जोति तडिताकी बलसीम पीनताकी शोभा जुगल

भुजा की है ॥ मेघ मै बला की पान्ति मोतिन हरा की कान्ति कंठ कंठिका की रमरङ्ग छबि छाकी है। मुख सुखमा की दिशि देखि मातिथा की राजनन्दन लला की बनी बांकी बरझांकी है ॥ ७ ॥ कंज पै मुकत, बोलैं कलहंस सुत कलकाम तूण युत सिंह छबि बापिका की है। करीमुंड, ककुद, कपाट कामद्वार, कंव, कामगेंद विंब दुति कुन्द कलिका की है। कंज कामचाप अर्द्धचन्द्र रसरंग मणी भृङ्गपुंज मीन सीप शोभाभानु भा की है। येती उपमा की उपमेयता युता की श्याम राम चन्द्रमा की मंजु बांकी बनी झांकी है ।८। चौतनी चमा की छबि अलक छला की भाल तिलक झला की मानो शोभा मंजुचा की है। भौंहैं धनु बांकी नैन बान उपमा की दुति नोखी नासिका की युत मोती भासिका की है मुखचन्द्रमा की हांसी कौमुदी कला सी बैन मैन की सु फांसी मन मंजुल भृगा की है। नेकु जेहि झांकी तेहि आन नहीं झांकी यही बार बार झांकी बांकी राम जी की

झांकी है ॥ ९ ॥ आली छबिसाली श्याम मूरति सु जोही मति लाज तजि मोही नहीं कौन अबला की है। मंद मुसक्यान चन्द किरिन समान कल भृकुटी कमान बान जोहनि सु बांकी है। वारैं रसरंग मनी अंगपै अनंग कोटि संग लागीं अंगना बिलोकैं मिथला की हैं॥ गोखनतें झांकी केती प्रीति पुंज छाकी मंजुमोहनी अदाकी बांकी राघवकी झांकी है॥ १० ॥ श्यामल किशोर चितचोर चारु चन्द लाल ललना चकोरी लखैं मंजु मिथिलाकी हैं। पाछे गौर रंग रसरंग मणी बंधुसोहैं अमित अनंग छबि जाके अंग छाकी है ॥ पीतपट छोर दारु चौतनी शिरन चारु उरन सुहीर हारु हेरि मति थाकी है। लोचन फलाकी उरकंज सविताकी राम लखन लला की बनी बांकी वर झांकी है ॥ ११ ॥ पीत उपवीत पट पीतही पुनीत कटि निपट निशंक चाल सिंह समताकी है। लंबित भुजान धनुबान मुसक्यान मंद दायनी महान मोद फंद मनसा की है। नैन मैन

बाण हूँ ते पैन रसरंग मणी भौं हैं कमनीय त्यों कमान हूँ ते बांकी हैं। प्यारे रघुवीर की हरन जन पीरकी सु छबि पुंज छाकी बनी बांकी बर झांकी है। १२। शोभा मघवाकी भरी देह भूरि आंखी शिर पंचहूं जटाकी छबि बिकट पिनाकी है। काय बिधिनाकी मुखचारि सुखमाकी जुत चारिहीं भुजाकी विष्णु वेद विदिताकी है। और जग काकी छबि जोग उपमाकी रसरंगमणी ताकी कहूँ छीट न छटाकी है॥ अजब अदाकी कोटि काममद नाकी राम लखन लला की बड़ी बांकी बनी झांकी हैं॥ १३॥ आली अवलोकु अलबेलों छैल गैल जात श्याम गात गात कोटि काम छबि छाकी है। आंखी अंबुजात ते अनोखी चोखी चित्तचुभैं भौं हैं चाप संग सिलीमुख सुखमा की हैं। सीस रसरंगमनी चौतनी चमकदार बदन उदार दुति छीनी चन्द्रमा की है। लोचनाभिराम बसै हियधाम आठौ जाम राम की ललाम श्याम बांकी बनी झांकी है॥ १४॥ भंजिकै पिनाक नाक नर नाग लोक रंजि

पूरी आश जनक सुनैना औ सियाकी है। मेली बिजैमाल रामलाल गले लोनी लली आली गीत गावतीं युगल छबि छाकी हैं। पुर लोग कौशिक लखन रसरंगमनी लखत चकोर शोभाराम चन्द्रमा की है। श्याम गौरताकी मनों दामिनी घटाकी महा मंजुल छटाकी बनी बांकी बर झांकी है॥ १५॥ ताजशिर बांकी तापै शिरपेंच बांकी कल कलगी सु बांकी काली अलक सुबांकी हैं। नासिका सुबांकी कान कुंडल हलनि बांकी, बांकी मुसक्यान रसरंग मोदछाकी है। भौंहैं भली बांकी बर बरुनी सुबांकी दृग जोहनी सु बांकी मानो मोहनी नशा की है। बांकी गौरताकी छबि सोहती सियाकी कोटि कामके कला की बांकी रामजी की झांकी है॥ १६॥ पागशिर बांकी शिरपेंच तापै बांकी लसैं अलक सु बांकी अलि पुंज उपमाकी हैं। नासिका सुबांकी मोती भासिका सु बांकी मंद मुसक्यानी बांकी अहा मीठी क्या मजा की है॥ भौं हैं बेस बांकी प्यारी आँखैं बर बांकी

मंजु मैनरस छाकी सैन मिलित सिया की हैं। बांकी सुआदकी बांके राम की सुझांकी रसरंगमणी झांकी रही ताकी कहा बांकी है ॥ १७ ॥ श्याम अंग बसन सुरंग सोहैं संग बंधु नाचत तुरंग चाल चलत चलांकी है। कंकन करन रसरंगमणी माल उर भाल में तिलक मंजु मौर शिर ढाँकी है ॥ चन्दन मुख मन्द मन्द हँसनि आनन्द भरी नैन अरबिन्द छबि फन्द मनसा की है। झांकी जेहि झांकी यह बांकी रही ताकी कहा राम दुलहा की बर बांकी बनी झांकी है ॥ १८ ॥ बारिद बरन बपु बिज्जु सो बसन बन्यो बाण बाण:- सनवंत बाहु बीरता की हैं। बिबिध बिभूषन बिशाल बनमाल बनी बाम में बिराजती त्यों बेटी बसुधा की हैं ॥ बिधु सो बदन बर बारिज बिलोचन हैं बिहसनि बड़ी बाधा बिदरनि बांकी है ॥ बसै रसरंग के बनज बुधि बोध बीच बिस्व बीर रामकी बिमल बांकी झांकी है ॥ १९ ॥

सीता तड़िता के तन बसन समान घन, घनश्याम तन पट दुति तड़िता की है। मानो कल नील कंज शीलपुंज सिया नैन लाल कंजहू ते मंजु आँखैं रसिया की हैं॥ पैखैं रसरंगमणी शोभा दोऊ दोहुँन की मंद मुसक्यात मोद प्रीति मति छाकी है। तीनौ लोक झांकी बुधि कतहूं न झांकी अस राघव सिया की जस बांकी बर झांकी है॥ २०॥ राजैं रघुबंशी निमिबंशी नर नारि मानो कंज, हंस हंसी शोभा सरसी सभा की है। चुनरी चटक रंग वनरी के अंग सोहै संग छहरात छबि भूषण प्रभाकी है॥ वसन सुरंग रसरंगमणी बनराके माथे मणि मौतिन की मौर मंजु बांकी है। जोरी श्याम गोरी चारि शोभा सुख वोरी लसैं बिश्व चित चोरी बनी बांकी बर झांकी है॥ २१॥ आए ब्याहि अवध उतारि अम्बलाई भौंन आसन पधारे पूजी आश मनसा की है। सीताराम मांडवी भरत उर्मिला लखन श्रुति कीर्ति शत्रु शाल शोभा समता की है॥ आरती उतारैं सुख सुखमा

निहारैं रसरंगमणि वारैं राई लोन मोद छाकी हैं। झांकी तीनलोक मति कतहूँ न झांकी जस चारि बधू दूलहकी झांकी बनी बांकी है ॥ २२ ॥ बैठे सिंह आसन पै सीता जू समेत श्याम अंग आभरन छबि मुकुट प्रभाकी है। भरतादि बंधु छत्र चामर चलावैं रसरंगमणी गावैं हनुमंत यश शाकी हैं ॥ फूल बरषावैं देव दुंदुभी बजावैं नाचि गावैं सुख पावैं नारिबृन्द देवता की हैं। सही छबि छाकी नेह नही नहवाती आज बांकी बनी राम राजगद्दी की सु झांकी है ॥ २३ ॥ छाके अनुराग छत्र लीन्हे छपा-नाथ रंग गौरअंग पाछे छबि लखन ललाकी है। दाहिने भरतलाल बाँए शत्रुशाल चारु चामर चलावैं मानो करचन्द्रमा की हैं ॥ राजत सुकंठ हनुमन्त रसरंगमणी मंत्री राजसाज शोभा अवध सभा की है। सोहैं सिंह आसन पै गौर श्याम सीताराम लोचनाभि राम बनी बांकी बर झांकी है ॥ २४ ॥

क्रीट चन्द्रिका की सीस लसनि सुबांकी बेनी अलक छलाकी ढार कुंडल प्रभाकी है। नैन सुखमा की दैन हेतु उपमा की थाकी मति सारदा की रही देखि छाबे छाकी है॥ अजब अदाकी मोद दायिनी सदा कीरति काम के कलाकी कमनीयता विवांकी है॥ शोभिता की सीताराम की सुझांकी रसरंगमणि झांकी रही ताकी कहा बांकी है॥ २५॥ जुगल किशोर गौर श्यामल सनेह सने ललित सुबाहु कल कंठन कसे रहैं। केलिके उछाह छबि छाके दोऊ दोहुन के लूटत अनन्द लीला लोभित लसे रहैं। फेरत बिलोचन बिलोल त्यों बिनोद माते राते रसरंगमणि हेरत हँसे रहैं। आनंद के कंद दोऊ चंद रघुनंद सिय सरस हमारे हिया कमल बसे रहैं॥ २६॥

दो०-सीधी शोभा आपकी बांकी कहि कियो गान।
रामक्षमा समक्षमा जुत क्षमा करिय प्रिय प्रान॥ १॥
इत्यनन्त श्रीरामानन्दीय स्वामी श्रीकामदेन्द्र माणि

शिष्य सीता रामशरण (रामरसरंगमणि) रचितं श्री राम झांकी विलासं सम्पूर्णम् । श्री हनुमते नमः श्रीअयोध्या मध्ये लिखितम् सं० १९६६ ज्ये. श्र. ५